शोध–प्रभा (ISSN : 0974-8946)
(A REFERRED & PEER- REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL)

बौद्धकालीन शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता

Dr. Vishnu kumar
Assistant professor, Department of Education Jain vishva Bharati institute, Ladnun
Kumarvishnu1975@gmail.com

सांराशः– बौद्ध दर्शन का प्रभाव तत्कालीन समाज पर विशेषकर परिलक्षित होता है तथा शिक्षा के क्षेत्र में बौद्धदर्शन ने पर्याप्त प्रभाव डाला था तथा तत्कालिन शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन किये। इस कारण से बौद्ध शिक्षा आदर्श मानी जाती है। आज जिन सुधारों एवं परिवर्तन की चर्चाएँ हो रही है वह परिवर्तन तथा सुधार लाने में बौद्ध शिक्षा मार्गदर्शन कर सकती है। बौद्ध शिक्षा में वे समस्त विशेषताएँ विद्यमान थी जिनकी आज आवश्यकता अनुभव की जा रही है। बौद्ध दर्शन की तत्वमिमांशा, ज्ञान मिमांशा एवं मूल्य मिमांशा बौद्ध शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षणविधि छात्रों तथा अध्यापकों की स्थिति, प्रौढ एवं सतत शिक्षा बौद्ध दर्शन में शिक्षा विस्तार एवं प्रभाव स्त्री शिक्षा सह शिक्षा का विकास एवं समाज पर प्रभाव बौद्ध दर्शन में शिक्षा केन्द्र तथा तक्ष शिक्षा नालन्दा, विक्रमशिला एवं शिक्षा केन्द्रों से संबंधित है।

प्रस्तावना :– छठी शब्ताब्दी ई.पू. प्राचीन वैदिक धर्म के विरोध में हमारे देश में धार्मिक क्रांतियां हुई जिसके परिणाम स्वरूप दो सुधारवादी धर्मों का उदय हुआ जो जैन धर्म तथा बौद्ध धम्र के नाम से प्रसिद्ध है। वैदिक कालीन धार्मिक और सामाजिक दशाओं को सुधारने के लिए गौतम बुद्ध ने जो उपाय बताये जिसे बौद्ध शिक्षा कहा गया। इस काल को शिक्षा की दृष्टि से स्वर्णयुग कहा जाता है क्योंकि इस काल में ऐस–ऐसे विश्वविद्यालय स्थापित किये गये है जिन्होंने वैदिक काल में प्राप्त भारत को विश्वगुरू की संज्ञा को सार्थक करने में अहम भूमिका निभाई। बौद्धकाल में शिक्षा का अर्थ ऐसे ज्ञान से था जो मनुष्य को जाग्रत करे। मनुष्य की योग्यता और रूचि के अनुसार स्वतन्त्र ढंग से विकास करने का अवसर देना। बौद्धकाल में शिक्षा का एक समाजशास्त्रीय अर्थ भी बताया जाता है जो जनतांत्रिक जीवन का आरम्भ करना और विकास करना था। इस काल में शिक्षा का उद्देश्य बौद्ध धर्म का प्रचार व प्रसार करना, निर्वाण की प्राप्ति, अहिंसा का प्रचार करना, संयमित जीवन, अपरिग्रह आदि प्रमुख उद्देश्य था। इस काल में पाठ्यक्रम में बौद्ध धर्म की शिक्षा, वेद पुराण, उपनिषद्, गीता, रामायण, महाभारत, गणित व्याकरण, ज्योतिषशास्त्र तथा विज्ञान आदि की शिक्षा प्रमुख थी।

बौद्धकालीन शिक्षा के शिक्षा के उद्देश्य : बौद्धों ने लौकिक तथा पारलौकिक दोनों प्रकार की शिक्षा व्यवस्था को स्थान दिया। फिर भी धार्मिक शिक्षा का प्रभाव अधिक था। नालन्दा, तक्षशिला, ओदन्तपुरी, पुरूषपुर आदि बौद्ध शिक्षा के प्रसिद्ध केन्द्र थे। बौद्ध शिक्षा में सार्वजनिक शिक्षा की व्यवसायी की गई। स्त्रियों को भी शिक्षा में स्थान दिया गया। स्त्रियों एवं शूदों पर सर्वप्रथम ध्यान बौद्धों ने दिया। प्रौढ़ों एवं सतत् शिक्षा का प्रचलन बौद्धों की ही देन है।

बौद्धकालीन शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों का निर्धारण लौकिक एवं पारलौकिक दोनो दृष्टियों से किया।

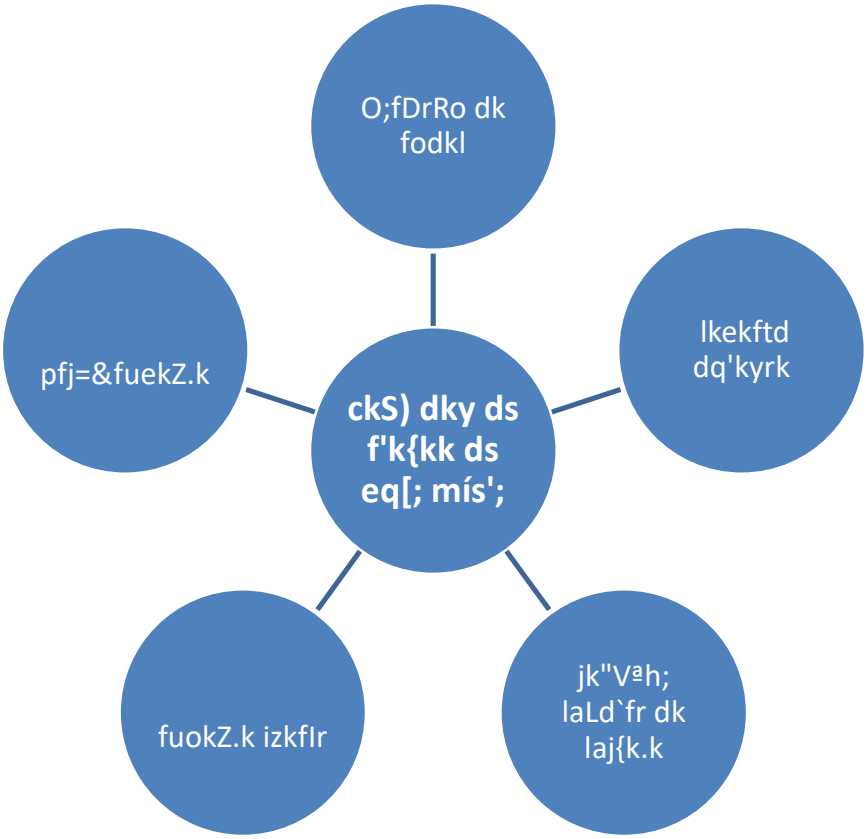

बौद्धकालीन शिक्षा का पाठ्यक्रम : बौद्धकाल में बालकों की प्रवृत्ति, प्रकृति सम्प्रेषण सिद्धान्त एवं पाठ्य सामग्री पर शिक्षण प्रणाली आधारित थी बौद्ध बिहारों में सर्वप्रथम सिद्धम द्वादशाव्यापी का अभ्यास कराया जाता था। इसके बाद व्याकरण, शिल्प, चिकित्सा तर्क एवं अध्यात्म विषयक शिक्षा प्रचलित थी। भिक्षुओं को वेद वेदांगों सहित न्याय, वैशेषिक, योग तथा सांख्य आदि आध्यात्मिक व दार्शनिक विषयों के अध्ययनार्थ प्रोत्साहित किया जाता था। बौद्धधर्मानुसार भिक्षुओं को शरीरच्छादन परम आवश्यक था। शिक्षा का लक्ष्य एक व्यक्ति को इन अष्टगुणी मार्ग पर चलने के लिए तैयार करना कहा जा सकता हैं। बौद्धिक शिक्षा अज्ञान को दूर करने का साधन समझी जाती थी। साहित्य कला व विज्ञान विषयक पाठ्यक्रमान्तर्गत जातक ग्रन्थों के अुनसार चिकित्सा धुर्नविधा, संगीत विद्या, वास्तु विद्या, मंत्र विद्या, सम्मोहन विद्या, वशीकरण विद्या अभिसार विद्या, तंत्र विद्या, शकुन विद्या और विद्या आदि आती हैं। स्त्री विषयक पाठ्यक्रम में भिक्षुणी संघ भी बौद्ध शिक्षा और सांस्कृति के विशेष केन्द्र थे। काव्य में पारंगत थी। पूर्वोक्त धार्मिक, आध्यात्मिक व तात्विक विषयों के अतिरिक्त स्त्रियों को ललित कलाओं की शिक्षा दी जाती थी। इसमें संगीत, उद्योग धन्धों की शिक्षा

दी जाती थी। धार्मिक एवं लौकिक पाठ्यक्रम में निवृति मूलक कथन व बौद्ध साहित्य में उपलब्ध होते हैं। विनय, सुतन्त्र व अभिधम्म आदि धार्मिक विषयों के साथ ही दार्शनिक, गन्धर्व, वेद तन्त्र विद्या, वास्तु विद्या व विधि शास्त्र आदि लौकिक पाठ्य विषय थे।

बौद्धकालीन शिक्षा का माध्यम : पाली व विविध भाषाओं में अनुवाद की व्यवस्था। बौद्धों की शिक्षा में प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा को अपनाया गया। प्राथमिक शिक्षा में पुस्तक की शिक्षा दी जाती थी। भिक्षुओं को शब्द, चिकित्सा, शिल्पासन, माध्यमिक एवं हेतु विद्या की शिक्षा दी जाती थी। लिपि के लिए तख्ती का प्रयोग किया जाता था। उच्च शिक्षा में बौद्ध धर्म, हिन्दु धर्म, दर्शन, आध्यात्मिक तर्क शास्त्र, नक्षत्र पल गणना विधि, खगोल विद्या, औषधि विज्ञान न्याय शास्त्र शल्य व्यवस्था एवं प्रशासन की शिक्षा दी जाती थी।

बौद्धकालीन शिक्षण विधि : बौद्धकालीन शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण विधियों का महत्त्वपूर्ण स्थान था। वैयक्तिक, अग्रशिष्य शिक्षण निरीक्षण एवं तुलना, शास्त्रार्थ विधि, मौखिक विधि, आचार्य शिष्य संवाद विधि, सम्मेलन, प्रवचन एवं व्याख्यान विधि द्वारा शिक्षण कार्य करते थे। बौद्ध काल में शिक्षक का स्थान महत्त्वपूर्ण था। शिक्षक किसी भी वर्ण का हो सकता था। शिक्षक ही मठ का अध्यक्ष होता था। छात्र उनके अधिकर में रहकर अध्ययन करते थे। शिक्षक शिक्षार्थी का संबंध मधुर था शिक्षक के अस्वस्थ होने पर शिक्षार्थी गुरूजी की सेवा करते थे।

मौखिक पाठ्यवस्तु विधि, कंठस्थीकरण विधि, विचार–विमर्श विधि, प्रश्न प्रति विधि, योजना विधि, व्याख्यान विधि, अनुशिक्षण विधि, बाल केन्द्रित विधि, निर्देशन विधि प्रकृति अध्ययन विधि प्रयोग विधि, परिभ्रमण विधि, क्रिया अभ्यास विधि आदि विधियां मुख्य थी।

बौद्धकालीन परीक्षा प्रणाली : सातवीं सदी ई. के पूर्व कुछ पंडित यश की प्राप्ति के लिए नालन्दा का नाम चुराते थे। यदि नालन्दा में उपाधियां दी तो यह सम्भव न हो पाता।

बौद्धकाल में अध्ययन का काल : अध्ययनकाल 22 वर्ष का था। 12 वर्ष पब्बज्जा का और 10 वर्ष उपसम्पदा का। अध्ययन काल 8 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होकर 30 वर्ष की आयु में होता था।

बौद्धकालीन शास्त्रीय विवाद : बौद्ध शिक्षा पद्धति की एक उल्लेखनीय विशेषता थी – शास्त्रीय विवाद। छात्र समय–समय पर एकत्र होकर विभिन्न विषयों पर परस्पर वाद–विवाद करके अपने ज्ञान में वृद्धि करते थे। मिरडेल का कथन है – "शास्त्रीय विवाद को प्रोत्साहित दिया जाता था। इस प्रकार की विज्ञ–मण्डलियां बौद्ध उच्च शिक्षा की एक अनोखी विशेषता थी।"

बौद्धकालीन स्त्री शिक्षा : बौद्ध धर्म में स्त्रियों का स्थान पुरूषों से निम्न है और भिक्षुओं को स्त्रियों से दूर रहने का आदेश दिया गया है। संघ में स्त्रियों को स्थान नहीं दिया

गया। जो स्त्रियां संघ में प्रवेश करती थी। उनको भिक्षुणी कहा जाता था। संघ में प्रवेश करने की आज्ञा ने स्त्री शिक्षा में काफी विकास हुआ।

बौद्धकालीन गुरू शिष्य संबंध : गुरू और शिष्य का संबंध स्नेहपूर्ण था। गुरू अपने शिष्य के सक्षम सादा जीवन, निरन्तर अध्ययन, निष्कलंक और ब्रह्मचर्य के आदर्श प्रस्तुत करता था। अनेक वर्षों तक निन्तर साथ रहने के कारण गुरू और शिष्य में पारस्परिक श्रद्धा निर्भरता और प्रेम का विकास हो जाता था। अपने गुरू के के साथ नवशिष्य के संबंधों का स्वरूप पुत्रानुरूप था। वे पारस्परिक सम्मान, विश्वास और प्रेम से आबद्ध थे।''

बौद्धकालीन सार्वजनिक या प्राथमिक शिक्षा इस शिक्षा के केन्द्र बौद्ध मठ थे। प्रारम्भ में यह शिक्षा केवल धार्मिक थी, पर बाद में सांसारिक शिक्षा दी जाने लगी। प्राथमिक शिक्षा 6 वर्ष की आयु में प्रारम्भ होती थी। शिक्षा का माध्यम पाली भाषा थी।

बौद्धकालीन उच्च शिक्षा : इसके केन्द्र बौद्ध मठ थे। व्याकरण, धर्म, ज्योतिष दर्शन, औषधि–विज्ञान आदि किसी में विशेष योग्यता प्राप्त की जा सकती थी। उच्च शिक्षा के प्रमुख केन्द्र नालन्दा, वलभी, विक्रमशील, जगदल, ओदन्तपुरी, मिथिला और नादिया थे।

बौद्धकालीन शिक्षा का महत्त्व एवं विशेषताएं :

- वर्तमान शिक्षा को धर्म, संस्कृति, दर्शन, अध्यात्म, नैतिक मूल्यों, जीवन मूल्यों, आदर्शों से युक्त करना होगा और इसकी निरंतरता स्थापित करनी होगी। इस दृष्टि से बौद्ध शिक्षा दर्शन की उपयोगिता एवं महत्व असंदिग्ध है।

- बौद्ध शिक्षा प्रणाली प्राचीन है फिर भी आधुनिक जीवन में अप्रत्यक्ष रूप से विद्यमान है। प्राचीन बौद्ध शिक्षा दर्शन का सर्वागींण तथा व्यापक अध्ययन किया जाये वह सभी गुण इसमें विद्यमान है।

- आधुनिक शिक्षा प्रणाली को समृद्ध बनाया जाता है। व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास द्वारा ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है।

- आधुनिक शिक्षा प्रणाली के स्वरूप निर्धारण में बौद्ध शिक्षा दशन को अपनाया जा सकता है। बौद्ध शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के उद्देश्यों के अनुरूप शिक्षा का पाठ्यक्रम निर्धारित था। पाठ्यक्रम में ऐसे विषय रखे जिससे आध्यात्मिकता का विकास होता था। वहीं दूसरी ओर व्यवसायपरक शिक्षा भी दी जाती थी ताकि विद्यार्थी अपने भविष्य के प्रति चिंतित ना रहे।

- चांडालों के अतिरिक्त सभी जातियों के व्यक्ति शिक्षा प्राप्त कर सकते थे।
- छात्रों के चुनाव के आधार थे।
- विद्याध्ययन आरम्भ करने की आयु 8 वर्ष की थी।
- प्रवेश के समय पव्बज्जा संस्कार सम्पादित होता था।
- 20 वर्ष की आयु में उपसम्पदा संस्कार सम्पादित होता था।
- अध्ययन काल 22 वर्ष का था।
- छात्रों के लिए भिक्षा मांगने, साधारण भोजन करने, कम वस्त्र पहनने, पानी में खेल न करने व अनुशासन में रहने का आदेश था।
- गुरू और छात्रों के एक–दुसरे के प्रति निश्चिय कर्तव्य थे।
- गुरू–शिष्य संबंध स्नेहपूर्ण थे।
- पाठ्यक्रम में बौद्ध, हिन्दु व जैन धर्म, दर्शन, अध्यात्म विद्या तर्क शास्त्र, संस्कृत, पानी, औषधि–विज्ञान, प्रशासन आदि विषय थे।
- शिक्षण–विधि मौखिक थीं पर तर्क, वाद–विवाद, विश्लेषण व्यवस्था व स्पष्टीकरण विधियों का भी प्रयोग किया जाता था।
- शिक्षा का माध्यम देश में प्रचलित भाषाएं थी।
- शिक्षा की पद्धति सामाजिक थी।
- शास्त्रीय विवाद प्रोत्साहित किये जाते थे।
- सामान्य विद्यालयों का आयोजन था।
- स्त्री शिक्षा का स्थान पुरूष शिक्षा से निम्न था।
- विभिन्न उद्योग व 19 शिल्पों की शिक्षा दी जाती थी।

बौद्धकालीन का वर्तमान में प्रासंगिकता

- वर्तमान शिक्षा प्रणाली निहित स्वार्थों की सहायता करने की प्रवृतियों को बढावा देती है। यथास्थिति को प्रोत्साहित करती है। शैक्षिक समानता के अवसरों का गला घोंटती है। इसके दुष्चक्र में फसकर सार्वभौम प्राथमिक शिक्षा की संवैधानिक प्रतिबद्धता को भी स्वतंत्रता के लगभग 60 वर्ष पूर्ण होने पर भी हम पूर्ण नहीं कर सके।

- देश में आज 25 प्रतिशत लोग निरीक्षर है। बौद्ध शिक्षा की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में प्रासंगिकता है। वर्तमान शिक्षा में बौद्ध शिक्षा का समावेश कर हम वर्तमान समाज को पुनः एक बार सुशिक्षित, सुपोशित एवं सुरक्षित कर सकते हैं। बौद्ध शिक्षा जहां एक और लाखों करोडों लोगों में शिक्षा के माध्यम से प्राण फूंकने में समर्थ है तो दूसरी और वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की कमियों को दूर करने में मार्गदर्शन कर सकती है।

सुझाव

- बौद्ध शिक्षा प्रणाली में अपनाई गई ससत् शिक्षा का अध्ययन करके हम वर्तमान सतत शिक्षा के सम्प्रत्यय को संरचित एवं सुगठित कर सकते हैं। बौद्ध शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण पक्ष था उसका धर्मदर्शन तथा अध्यात्म से बहुत दूर हो चुकी है। मानव जाती का उद्दार आत्मज्ञान से ही संभव है। आत्मज्ञान अध्यात्म ज्ञान के बिना संभव नहीं है।

- अतः वर्तमान शिक्षा प्रणाली में दर्शन तथा धर्म को भी पाठ्यक्रम में स्थान देना होगा। धर्म एवं दर्शन से दूर होने के कारण ही आज मानव अपने नैतिक मूल्यों को खो चुका है।

- मानव जीवन के पहलू है भौतिक तथा आध्यात्मिक। आज मनुष्य अपना अधिकांश समय भौतिक संसार को ही देता है। मनुष्य जीवनरूपी गाडी सही–सही चलेगी जब भौतिक एवं आध्यात्मिक रूपी दोनों पटरियाँ समान होगीं। आध्यात्मिक ज्ञान से ही आज समाज में राष्ट्रीय एकता अखण्डता मानव प्रेम एवं सद्भावना की शिक्षा प्रदान की जा सकती है। आज का मानव अपने लक्ष्य से दिशाहीन हो चुका है। अतः आधुनिक शिक्षा में बौद्ध शिक्षा दर्शन का समावेश ही वर्तमान मानव का मार्गदर्शन कर सकता है।

- वैयक्तिगत विकास एवं वैयक्तिगत उन्नति को शिक्षा का आधार मानते हैं। अध्यापन प्रणाली वैयक्तिगत रही है। बौद्ध शिक्षा प्रणाली में छोटे–छोटे समूहों में शिक्षा प्रदान करने की चेष्ठा हुई है। इन समूहों में शान्ति व समन्वय बनाये रखने हेतु अनशासन के नियम बनाये गये जो आधुनिक सिद्धान्तों के अनुरूप ही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. ओड़, लक्ष्मी लाल के. (2008) : 'शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि', राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
2. चौबे, सरयू प्रसाद (2008) : 'तुलनात्मक अध्ययन', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
3. जौहरी एवं पाठक (2007) : 'भारतीय शिक्षा इतिहास', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
4. नारंग, सुनीता, अनुराधा (2007) : 'उद्दीयमान भारतीय समाज में शिक्षा', कल्याणी पब्लिर्स, लुधियाना
5. पाण्डे, रामशकल (2005) : 'शिक्षा दर्शन और शिक्षाशास्त्री', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
6. पाठक, त्यागी, (2006) : 'शिक्षा के सिद्धान्त', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
7. पाण्डेय, रामशकल : 'उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
8. पाण्डे, रामशकल (2008) : 'शिक्षा दर्शन', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
9. शर्मा, आर.ए. (2011) : 'विश्व की शिक्षा प्रणालियाँ एवं समस्याएँ'', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
10. त्यागी, गुरूसरनदास (2007) : 'शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2
11. त्यागी, औंकारसिंह : 'उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा' अरिहंत शिक्षा प्रकाशन, जयपुर